हिन्दी विभाग

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी हिन्दी विभाग ने अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया । हिन्दी विभाग के इतिहास में पहली बार छात्रों को भी प्राध्यापकों के साथ संगोष्ठी में जाकर प्रपत्र पढ़ने का अवसर मिला । इस वर्ष तृतीय वर्ष एवं एम. ए. प्रथम वर्ष के छात्रों ने संशोधन पत्र पढ़े । यह संगोष्ठी रत्नागिरी के गोगटे जोगलेकर महाविद्यालय में २१-२२ सितंबर को सम्पन्न हुई।

हिन्दी विभाग की ओर से २९ जून २०१३ को प्रेमचंद की चुनिन्दा कहानियों पर लघु फिल्म का प्रदर्शन किया गया । जुलाई को सरल हिन्दी की कक्षाएं प्रारम्भ हुई । अगस्त को 'स्त्रियों को बेहतर सुरक्षा कैसे प्रदान की जाय' इस विषय पर समस्त छात्रों के लिए भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अगस्त के दिन एम. ए. प्रथम वर्ष की कक्षाएं नियमित रूप से प्रारम्भ हुई। २ सितम्बर से ९ सितम्बर के बीच कोयोटो संगयों विश्वविद्यालय, जापान के छात्रों को हिन्दी अध्यापन का कार्य दोनों प्राध्यापकों ने किया। ये छात्र सांस्कृतिक आदान-प्रदान के तहत भारत आए थे ।

१६ सितंबर के दिन विभाग ने 'विश्व पटल पर हिन्दी' इस विषय पर मुंबई विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष डॉ करुणाशंकर उपाध्याय जी का अतिथि व्याख्यान आयोजित किया गया। फरवरी के दिन विभाग ने यूनिकोड और हिन्दी इस विषय पर एक दिवसीय अंतर महाविद्यालयीन कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला के पहले सत्र में पड़ोसी महाविद्यालयों के छात्रों ने अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। दूसरे सत्र में राजभाषा आयोग पुणे से सहायक निदेशक श्री राजेंद्र वर्मा जी ने प्रत्यक्ष कार्यशाला लेकर छात्रों को यूनिकोड हिन्दी में कार्य करना सिखाया।

डॉ अनिल ढ़वले द्वारा प्राप्त उपलब्धियां एवं गतिविधियां -

विद्यावाचस्पति उपाधि मुंबई विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा डॉ विष्णु सरवदे जी के मार्गदर्शन मे प्रदान की गयी। शोध का शीर्षक था - नाटककार मोहन राकेश एवं विजय तेंदुलकर के नाटकों का तुलनात्मक अध्यन (सामाजिक संदर्भ में)

डॉ अनिल ढ़वले का शोधपत्र दिल्ली से प्रकाशित प्रतिष्ठित वार्षिकांक दलित साहित्य पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। , सितम्बर को विभाग अपने तृतीय वर्ष के छात्रों के साथ रत्नागिरी विश्व विद्यालय अनुदान आयोग एवं गोगटे जोगलेकर महाविद्यालय के

संयुक्त तत्वावधान में आयोजित द्वि दिवसीय संगोष्ठी में विषय प्रवर्तक के रूप में नाम शामिल किया गया ।

बी. ए. तथा एम. ए. पाठ्यक्रम पर आयोजित कार्यशालाओं में सक्रिय सहभाग।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में दो प्रपत्र प्रस्तुत एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में दो प्रपत्र प्रस्तुत।

डॉ जयश्री सिंह द्वारा की गईं गतिविधियां -

जयपुर से प्रकाशित अरावली उद्घोषपत्रिका के सौवें अंक में उनका आलेख प्रकाशित हुआ, जिसका शीर्षक था पूर्वोत्तर भारत का आदिवासी समाज : समजशास्त्रीय अद्यायन

सितंबर माह में हिन्दी पखवाड़ा पक्ष के उपलक्ष्य में हिन्दी दिवस का महत्व इस शीर्षक से प्रयाग द्वारा प्रकाशित पाक्षिक पत्रिका राष्ट्रभाषा संदेश में आलेख प्रकाशित हुआ।

सितंबर को रत्नागिरी के गोगटे जोगलेकर महाविद्यालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में हिन्दी पत्रकारिता के प्रारम्भिक अवदानविषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उनके इस आलेख के लिए उन्हें महाविद्यालय ने उत्कृष्ट संशोधन पत्र पुरस्कार से सम्मानित किया।

नवंबर को सी. एच. एम. महाविद्यालय द्वारा आयोजित द्वि दिवसीय अंतर राष्ट्रीय संगोष्ठी में उन्होने संत रविदास की मानवीय चेतना विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

जनवरी में आर जे महाविद्यालय घाटकोपर द्वारा प्रकाशित शोध पत्रिका में उनका हिन्दी पत्रकारिता : आरंभ एवं संघर्ष नामक आलेख प्रकाशित हुआ।

जनवरी के दिन महाविद्यालय के स्पीकर्स अकादमी द्वारा भाषण कौशल विषय पर उन्हें अतिथि व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया ।

फरवरी को मुंबई विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा पं नरेंद्र शर्मा जन्मशतवार्षिकी पर आयोजित द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं - मार्च को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जन्मशतकोत्तर संगोष्ठी में वे सक्रिय रूप से सहभागी हुई ।

इन सारी शैक्षणिक गतिविधियों को करने में प्राचार्या डॉ. शकुंतला अ. सिंह जी का सहयोग एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ, साथ ही उपप्राचार्य डॉ. भिड़े मैडम एवं एस. जी. शिंदे जी का सहयोग मिलता रहा।

- विभागाध्यक्ष

डॉ. अनिल ढ़वले